सूरह — एक कहानी

सूरह अल-'अलक़

जमा हुआ ख़ून

पूरा सफ़र — सबसे पहले नाज़िल होने वाले अल्फ़ाज़ —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 96 • 19 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इक़्रअ बिस्मि रब्बिकल्-लज़ी ख़लक़

1. पढ़िए अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया।

ख़लक़ल्-इंसान मिन 'अलक़

2. इंसान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया।

अल्लज़ी 'अल्लम बिल्-क़लम

4. जिसने क़लम के ज़रिए सिखाया।

कल्ला इन्नल्-इंसान ल-यत्ग़ा। अर्-र-आहुस्-तग़्ना

6-7. बेशक इंसान सरकश हो जाता है, जब वो ख़ुद को बे-नियाज़ समझता है।

अलम य'लम बि-अन्नल्-लाह यरा

14. क्या वो नहीं जानता कि अल्लाह देख रहे हैं?

वस्जुद वक़्तरिब

19. और सजदा कीजिए और क़रीब हो जाइए।

ग़ार की वो रात

बेटा, आज हम वो पहले अल्फ़ाज़ पढ़ते हैं जो अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ पर नाज़िल किए — वो जुमला जिससे इंसानियत की तरफ़ आख़िरी वही का आग़ाज़ हुआ।

इससे सालों पहले से आप ﷺ मक्का के बाहर पहाड़ पर ग़ार-ए-हिरा में ख़ल्वत इख़्तियार कर रहे थे। आप साथ खाना ले जाते और कई कई रात वहीं अकेले ठहरते — इबादत करते, सोचते, एक ऐसे शहर से परेशान जो बुतों, ज़ुल्म और ज़िंदा दफ़्न की जाने वाली बेटियों में डूब चुका था, और एक ऐसी चीज़ की तलाश में जिसे अभी तक नाम नहीं दे सकते थे। हमारी माँ आइशा (रज़ि0) ने बताया कि इसकी इब्तिदा सच्चे ख़्वाबों से हुई: आप कुछ नींद में देखते, और वो सुबह के उजाले की तरह सामने आ जाता।

और फिर, रमज़ान में, उसी ग़ार में, फ़रिश्ता आप के पास आया।

जिब्रील (अलैहि0) ने कहा: इक़्रअ — पढ़िए। आप ﷺ ने फ़रमाया: 'मा अना बि-क़ारि' — मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ। फ़रिश्ते ने आपको पकड़ कर इतनी ज़ोर से भींचा कि आप बर्दाश्त न कर सके, फिर छोड़ा और दोबारा कहा: इक़्रअ। आपने फिर फ़रमाया: मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ। दूसरी बार भींचा और छोड़ा। और तीसरी बार: इक़्रअ — और फिर ये अल्फ़ाज़ आए:

'इक़्रअ बिस्मि रब्बिकल्-लज़ी ख़लक़ — पढ़िए अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया — ख़लक़ल्-इंसान मिन 'अलक़ — इंसान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया — इक़्रअ व रब्बुकल्-अकरम — पढ़िए, और आपका रब सबसे ज़्यादा करीम है — अल्लज़ी 'अल्लम बिल्-क़लम — जिसने क़लम के ज़रिए सिखाया — 'अल्लमल्-इंसान मा लम य'लम — इंसान को वो सिखाया जो वो नहीं जानता था।'

और आप ﷺ काँपते दिल के साथ घर तशरीफ़ लाए और ख़दीजा (रज़ि0) से फ़रमाया: 'ज़म्मिलूनी — मुझे चादर उढ़ा दो!' उन्होंने आपको लपेट दिया, और जब ख़ौफ़ थम गया तो आपने सब कुछ बताया और फ़रमाया: मुझे अपनी जान का डर है।

बेटा, उनका जवाब सुनिए, क्योंकि यह इंसानी तारीख़ के सबसे अज़ीम जुमलों में से एक है: 'हरगिज़ नहीं! अल्लाह की क़सम, अल्लाह आपको कभी रुसवा नहीं करेंगे। आप रिश्तेदारों से सिला-रहमी करते हैं, कमज़ोरों का बोझ उठाते हैं, ग़रीबों और मोहताजों की मदद करते हैं, मेहमान की इज़्ज़त करते हैं, और मुसीबत ज़दा लोगों के काम आते हैं।'

सुब्हानल्लाह, बेटा। उनके ख़ौफ़ के लम्हे में उन्होंने कोई नज़रिया पेश नहीं किया — उन्होंने उनका अपना अख़लाक़ उन्हीं को लौटा दिया। उन्होंने कहा: जो शख़्स इस तरह जीता है, अल्लाह उसे छोड़ते नहीं। यह याद रखिए जब आप किसी को तसल्ली दें: उसे उसकी अपनी नेकियाँ याद दिला दीजिए।

पढ़िए — मगर किसके नाम से?

अब ख़ुद इन अल्फ़ाज़ को देखिए, बेटा, क्योंकि इस पहली वही का हर हर्फ़ सोच समझ कर रखा गया है।

क़ुरआन का सबसे पहला हुक्म है 'इक़्र-अ' — पढ़िए। 'लड़ो' नहीं, 'नमाज़ पढ़ो' नहीं, 'रोज़ा रखो' नहीं। पढ़िए। एक ऐसे शख़्स से जो लिख पढ़ नहीं सकते थे, एक ऐसी क़ौम में जो लिखना पढ़ना नहीं जानती थी। अल्लाह ने इंसानियत के आख़िरी दीन का आग़ाज़ पढ़ने के हुक्म से किया।

मगर ग़ौर कीजिए, बेटा — यह अकेला 'पढ़ो' नहीं है। यह 'इक़्र-अ बिस्मि रब्बिक' है — अपने रब के नाम से पढ़िए। इल्म अल्लाह से जुड़ा हुआ। क्योंकि उसके बग़ैर इल्म बिल्कुल वही पैदा करता है जो हमारी दुनिया पैदा कर रही है: ज़हानत मगर ज़मीर के बग़ैर, ऐसी टेक्नोलॉजी जो एटम तो तोड़ सकती है मगर यह फ़ैसला नहीं कर सकती कि तोड़ना चाहिए या नहीं, ऐसे लोग जो सब कुछ जानते हैं और किसी चीज़ का एहतिराम नहीं करते।

'अल्लज़ी ख़लक़ — जिसने पैदा किया।' और फिर फ़ौरन, वो तफ़्सील जो सर झुका देती है: 'ख़लक़ल्-इंसान मिन 'अलक़ — इंसान को जमे हुए ख़ून, चिपकने वाली चीज़ से पैदा किया।'

बेटा, "अलक़' उस चीज़ को कहते हैं जो चिपकती और लटकती है — और यह उस इब्तिदाई मरहले का बयान है जब जानीन रहम की दीवार से चिपका होता है। तो सबसे पहली बात जो अल्लाह उस शख़्स को बता रहे हैं जिसे वो तारीख़ का सबसे बड़ा मुअल्लिम बनाने वाले हैं, यह है: याद रखो तुम क्या थे। एक चिपकता हुआ ज़र्रा। पढ़ो — मगर अपनी इब्तिदा कभी मत भूलो।

'इक़्र-अ व रब्बुकल्-अकरम — पढ़िए, और आपका रब अल-अकरम है — सबसे ज़्यादा करीम।' बेटा, यहाँ यह नाम क्यों? क्योंकि वो अभी यह बयान करने वाले हैं कि वो इल्म किस तरह देते हैं — और इल्म का देना उनकी सबसे बड़ी करम-नवाज़ी है। वो हमें जहालत में छोड़ सकते थे; इसके बजाय वो सिखाते हैं।

'अल्लज़ी 'अल्लम बिल्-क़लम — जिसने क़लम के ज़रिए सिखाया।' बेटा, एक ऐसे शहर में जहाँ तक़रीबन कोई लिखना नहीं जानता था, अल्लाह ने अपनी पहली वही में क़लम को शरफ़ बख़्शा। क़लम वो ज़रिया है जिससे इल्म सदियाँ पार करता है —

जिससे एक आलिम जो हज़ार साल पहले वफ़ात पा गया, आज रात भी आपको पढ़ा सकता है। हर वो किताब जिससे आपने कभी फ़ायदा उठाया, इसी आयत की अता है।

"अल्लमल्-इंसान मा लम य'लम — इंसान को वो सिखाया जो वो नहीं जानता था।' बेटा, जो कुछ आप जानते हैं — वो ज़ुबान जिसमें आप सोचते हैं, वो हुनर जिससे आप कमाते हैं, ख़ुद अल्लाह के बारे में आपका इल्म — यह सब एक ऐसे ज़ेहन में दाख़िल हुआ जो कभी कुछ भी नहीं जानता था। आप एक लफ़्ज़ जाने बग़ैर पैदा हुए थे। आपके सर में मौजूद हर एक चीज़ एक तोहफ़ा थी।

जब इंसान सरकश हो जाता है

और फिर, बेटा, सूरह आगे बढ़ती है — इल्म की ख़ूबसूरती से उस बीमारी की तरफ़ जो इल्म वालों को तबाह करती है: 'कल्ला इन्नल्-इंसान ल-यत्ग़ा — हरगिज़ नहीं! बेशक इंसान सरकश हो जाता है — अर्-र-आहुस्-तग़्ना — जब वो ख़ुद को बे-नियाज़ देख लेता है।'

बेटा, यह तशख़ीस याद कर लीजिए, क्योंकि यह उस हर तकब्बुर की वज़ाहत कर देती है जिससे आपका कभी सामना होगा। 'इस्तिग़्ना' — यह एहसास कि मुझे किसी की ज़रूरत नहीं: मेरी डिग्री है, मेरी आमदनी है, मेरी ताक़त है, मेरे ताल्लुक़ात हैं; मैं ठीक हूँ।

और क़ुरआन कहता है कि यही एहसास 'तुग़्यान' का महाज़ है — सरकशी, बग़ावत, हर हद से गुज़र जाना। बेटा, जो शख़्स ख़ुद को मोहताज महसूस करता है वो दुआ करता है। जो ख़ुद को बे-नियाज़ समझता है वो बहस करता है। इल्म और दौलत ख़ुद ख़राब नहीं करते — वो ख़ुद-मुख़्तारी का धोका ख़राब करता है जो उनके साथ आता है।

और तसहीह फ़ौरन और मुख़्तसर है: 'इन्ना इला रब्बिकर्-रुज्आ — बेशक आपके रब ही की तरफ़ लौटना है।' आप ख़ुद-मुख़्तार महसूस कर रहे हैं? आप उन्हीं की तरफ़ वापसी के रास्ते पर हैं।

फिर सूरह एक ज़िंदा मिसाल देती है — वो जो इन आयतों के नुज़ूल के वक़्त मक्का में हो रही थी: 'अ र-अयतल्-लज़ी यन्हा — क्या आपने उसे देखा जो रोकता है — 'अब्दन

इज़ा सल्ला — एक बंदे को जब वो नमाज़ पढ़ता है?'

बेटा, रिवायतों में अबू जहल का नाम आता है, जिसने क़सम खाई थी कि अगर उसने मुहम्मद ﷺ को काबा के पास नमाज़ पढ़ते देखा तो उनकी गर्दन पर पाँव रख देगा। इसकी क़बाहत सोचिए: एक आदमी जिसकी ज़िंदगी का मिशन ही यह बन गया कि एक दूसरे आदमी को नमाज़ पढ़ने से रोके। 'इस्तिग़्ना' बढ़ कर यही बनती है।

'अ र-अयत इन कान 'अलल्-हुदा — क्या आपने सोचा, अगर वो हिदायत पर हो — औ अमर बित्-तक़्वा — या तक़्वा का हुक्म देता हो?' — तो फिर तुम क्या कर रहे हो? 'अलम य'लम बि-अन्नल्लाह यरा — क्या वो नहीं जानता कि अल्लाह देख रहे हैं?'

बेटा, यह आख़िरी सतर — 'अलम य'लम बि-अन्नल्लाह यरा' — इस सूरह की ख़ामोश बिजली है। हर गुनाह, अपनी जड़ में, इसी एक हक़ीक़त को भूल जाने पर खड़ा होता है।

पेशानी, और सजदा

'कल्ला ल-इन लम यन्तहि — हरगिज़ नहीं! अगर वो बाज़ न आया — ल-नस्फ़-अन बिन्-नासियह — हम उसे ज़रूर पेशानी के बालों से घसीटेंगे — नासियतिन काज़िबतिन ख़ातिअह — उस झूटी, ख़ताकार पेशानी से।'

बेटा, 'नासियह' सर का अगला हिस्सा है, पेशानी के बाल — और अरबी में किसी को पेशानी से पकड़ना इंतिहाई ज़िल्लत है, जिस तरह किसी क़ैदी को घसीटा जाता है। और ग़ौर कीजिए: अल्लाह ख़ुद पेशानी को 'झूटी और ख़ताकार' कह रहे हैं। उलमा निशानदेही करते हैं कि दिमाग़ का अगला हिस्सा, माथे के पीछे, फ़ैसला करने और मंसूबा बनाने का मरकज़ है — वही जगह जहाँ झूट ज़ुबान पर आने से पहले तैयार होता है।

'फ़ल्-यद्'उ नादियह — तो वो अपनी महफ़िल, अपने साथियों को बुला ले — सनद्'उज़्-ज़बानियह — हम जहन्नम के फ़रिश्तों को बुलाएँगे।' बेटा, अबू जहल की अपनी महफ़िल थी, अपने हामी थे, सरदारों का अपना क्लब था। अल्लाह फ़रमाते हैं: बुला लो उन्हें। देख लेते हैं किसकी जमाअत मज़बूत है।

और तारीख़ ने जवाब लिख दिया। अबू जहल अपनी महफ़िल के साथ बद्र गया और वहीं मारा गया — एक नौजवान सहाबी ने उसे मैदान से घसीटा, और उसकी लाश एक कुएँ में डाल दी गई। उसकी 'नादी' उसे नहीं बचा सकी।

और अब, बेटा, सूरह की आख़िरी आयत — और देखिए यह कितनी शानदार तरह ख़त्म होती है: 'कल्ला ला तुति'हु — हरगिज़ नहीं! उसकी बात मत मानिए — वस्जुद वक़्तरिब — बल्कि सजदा कीजिए, और क़रीब हो जाइए।'

बेटा, इस जवाब की मुकम्मलियत महसूस कीजिए। एक ज़ालिम धमकी दे रहा है कि अगर तुम नमाज़ पढ़ोगे तो मैं तुम्हारी गर्दन पर पाँव रख दूँगा। और अल्लाह का हुक्म यह नहीं कि 'उससे लड़ो' या 'उससे बहस करो' — हुक्म यह है: सजदा करो, और मेरे क़रीब आ जाओ।

वही अमल जिसे वो रोकना चाहता था, वही अमल आपको बढ़ाने का हुक्म दिया गया। और हुक्म के अंदर छुपा हुआ अज्र देखिए: 'वक़्तरिब' — क़रीब हो जाइए। नबी ﷺ ने फ़रमाया: बंदा अपने रब के सबसे ज़्यादा क़रीब उस वक़्त होता है जब वो सजदे में होता है।

तो इंसानियत पर नाज़िल होने वाली पहली सूरह, बेटा, 'पढ़ो' से शुरू होती है और 'सजदा करो' पर ख़त्म होती है। शुरू में इल्म, आख़िर में आजिज़ी। यही मोमिन की ज़िंदगी का पूरा नक़्शा है: सीखो, और फिर अपनी पेशानी ज़मीन पर रख दो। जो इल्म सजदे पर ख़त्म न हो, वो कहीं ग़लत मुड़ गया।

और यह आयत सजदा की आयत है — तो जब आप इसे पढ़ें, सजदे में चले जाइए। बेटा, इस मिठास का तसव्वुर कीजिए: ज़ालिम ने कहा था 'मैं इसे सजदे से रोक दूँगा' — और अब, चौदह सौ साल से, इन आयतों का हर पढ़ने वाला ठीक उसी जगह सजदे में गिर जाता है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. क़ुरआन का पहला हुक्म 'पढ़ो' था — मगर हमेशा 'अपने रब के नाम से'; उससे कटा

हुआ इल्म ज़मीर के बग़ैर ज़हानत बन जाता है।

2. अपनी इब्तिदा याद रखिए: एक चिपकता हुआ ज़र्रा। पढ़िए, सीखिए, बढ़िए — और अपनी नज़र में छोटे रहिए।

3. आपके ज़ेहन की हर चीज़ एक ऐसे दिमाग़ को दिया गया तोहफ़ा थी जो कभी कुछ नहीं जानता था।

4. 'इस्तिग़ना' — ख़ुद को बे-नियाज़ समझना — हर सरकशी का महाज़ है; मोहताज दिल दुआ करते हैं, 'ख़ुद-मुख़्तार' बहस।

5. लोगों को वैसे तसल्ली दीजिए जैसे ख़दीजा (रज़ि0) ने दी: उन्हें उनकी अपनी नेकियाँ याद दिला दीजिए।

6. हर गुनाह में एक लम्हा होता है जब 'क्या वो नहीं जानता कि अल्लाह देख रहे हैं' भुला दिया जाता है।

7. जब कोई आपकी इबादत रोकना चाहे, जवाब यही है: सजदा कीजिए और क़रीब हो जाइए — अल्लाह के सबसे ज़्यादा क़रीब आप सजदे में होते हैं।

या अल्लाह, हमें वो सिखाइए जो हमें नफ़ा दे, हमें अपना मोहताज रखिए, और हमारे हर इल्म का अंजाम सजदा बना दीजिए। आमीन।